औरंगाबाद जिले की हिंदी भाषा

प्रा.डॉ.मनोहर भंडारे
हिंदी विभाग श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय,
उदगीर जि.लातूर (महा.)
भ्रमणध्वनि

प्रस्तावना

महाराष्ट्र के औरंगाबाद में निपट निरंजन संत रहते थे। उन्होंने मुगलों के समय अपने अध्यात्म का प्रचार हिंदी–मराठी मिश्रित दक्खनी हिंदी में किया। वैसे वे उत्तर भारतीय थे किन्तु जीवन के उत्तरार्ध तक औरंगाबाद में ही रहें। उसी भाँति वल्ली औरंगाबादी भी औरंगाबाद में थे। उन्होनें दक्खनी हिंदी में काव्य रचना की किन्तु लिपि फारसी थी। साथ ही कुछ नाथ संप्रदायी लोगों ने भी बैरागी भाषा का प्रयोग किया था। वे गहनीनाथ के शिष्य थे। वे भी पैठण आते थे। उन्हीं से प्रभावित संत ज्ञानेश्वर ने हिंदी में भी काव्यरचना की है। पैठण के ही संत एकनाथ ने हिंदी में काव्यरचना की है।

औरंगाबाद में कलगी–तुर्रे के तीन अखाडे थे। वे एक ही पद में हिंदी और मराठी भाषा का प्रयोग करते थे, जैसे–

''नार गोमटी अंतर कपटी वशी करो मिया मला
मोहब्बत में काटी गला।।टेक।।
गोड गोड प्रियवचन बालनी माया लावली मसी।
अब करो जगत में हंसी।
सुंदर नार घातकी फार सोन्याची कट्यारी सी
अब संगीन जीगर में फसी।''[1]

इन अखाडों में हिन्दू–मुस्लिम दोनों का योगदान रहा है। इसमें उर्दू, हिंदी, मराठी मिश्रित दक्खनी हिंदी प्रयुक्त होती थी। वर्तमान समय में भी औरंगाबाद के गवली समाज के लोग कलगी–तुर्रा काव्य प्रकार का प्रयोग त्योहारों में करते हैं।

वर्तमान समय में उस्मानपुरा, बेगमपुरा, बायजीपुरा, पहाडसिंगपुरा, सिटी चौक और शहागंज मुस्लिम बहुल क्षेत्र है और बेगमपुरा के विद्युत कॉलनी में अहीर गवली तथा कहार रहते हैं। इन सभी भागों में हिंदी का प्रयोग अधिक मात्रा में होता है। मुस्लिम की हिंदी पर उर्दू का प्रभाव तो गवली के भाषा पर मराठी का प्रभाव है। औरंगपुरा बाजार में सभी समूह के अधिकतर लोग हिंदी में वार्तालाप करते हैं। साथ ही गुजराती, मारवाडी, राजस्थानी तथा उत्तर भारतीय बाजार में हिंदी में ही वार्तालाप करते हैं।

शहागंज में 'महाराष्ट्र हिंदी भाषा प्रचार सभा' का कार्यालय है जिनका महाराष्ट्र हिंदी विद्यालय है जिसकी माध्यम भाषा हिंदी और मराठी दोनों भी है। साथ ही औरंगाबाद से 'दै.लोकमत समाचार' और 'औरंगाबाद सिटीजन्स' दो समाचार पत्र हर दिन हिंदी में प्रकाशित होते हैं। मराठवाडा में दै. लोकमत समाचार ही ऐसा समाचार पत्र है जो हिंदी समाचार पत्रों में सबसे अधिक पढा जाता है। इसमें मराठी शब्द अधिक मात्रा में आते हैं। कई बार अनुदित भाषा का परिचय लोकमत समाचार से होता है जो उसकी मर्यादा है। औरंगाबाद 'सिटीजन्स' समाचारपत्र दैनिक रूप 1985 से प्रकाशित हो रहा है। जिसका घोषवाक्य है– 'शोषित, उपेक्षित, वंचित समाज की बुलंद आवाज।'

जालना की तुलना में औरंगाबाद की हिंदी पर उर्दू का अधिक प्रभाव है। उद्धरण के रूप में बशीर नवाज का संवाद–

''देखिये यहाँ हिंदी है, यहाँ की हिंदी पर मराठी का असर है
उर्दू में भी मराठी के अल्फाज है और मराठी में उर्दू के अल्फाज''

आदान प्रदान के लिए सबसे बडी चीज जबान है। गलियों में, घरों में, महफिलों में इन्सानों के साथ–साथ भाषा चलती है। उत्तर प्रदेश में बोलनेवाली हिंदी यहाँ बोली जायेगी यह संभव नहीं हो सकता। दुनिया की कोई जबान ऐसी नहीं है जो पूरब से लेकर पश्चिम तक एक ही होगी। वह बीस–बीस, पच्चीस–पच्चीस किलोमीटर पर बदलती जाती है। उस पर कल्चर का असर होता है। जबान केवल शब्दों का नाम नहीं है। जबान के पीछे कल्चर बोलता है। एक पूरी तहजीब बोलती है। एक परंपरा बोलती है। परंपरा तो एक आदमी नहीं बनाता। मैं नहीं बनाता, तुम नहीं बनाते, यह नहीं बनाता, वो नहीं बनाता। परंपरा तो साथ–साथ रफ्तार–रफ्तार बनती जाती है।''[2]

महाराष्ट्र की मातृभाषा मराठी है। यहाँ प्रत्येक गाँव में कम–अधिक मात्रा में मराठी बोली जाती है किन्तु औरंगाबाद जिले के खुलताबाद तहेसिल के अंतर्गत जाफरावाडी नामक गाँव है जिस गाँव में सभी व्यक्ति हिंदी में ही वार्तालाप करते हैं। उनकी मातृभाषा ही हिंदी है। मराठवाडा संभाग में ऐसा एकमात्र यह गाँव होगा जिसमें केवल हिंदी का प्रयोग होता है। इस गांव में दूसरी भाषा बोली ही नहीं जाती है। इस गांव में तीन समूह के अर्थात् परदेशी, धनगर और मुस्लिम लोग रहते हैं। तीनों की मातृभाषा तथा संपर्क भाषा हिंदी है। किन्तु इन तीनों की भिन्न–भिन्न तीन शैलियाँ मिलती है जैसे–

परदेशी शैली	धनगरी शैली
• बूढा कहाँ गया	• डोकरा कहाँ गया
• रोटी खाबा की	• रोटी खाबे की
• पानी पीने का	• पानी पिबोगे
• पैठ को कहाँ जा रहे है	• सुबह कू कहाँ जा रहा है
• धुप बहुत है	• लई कडक घाम गिरोल भई
• दो डबे कपासी लगाओ की	• दो डबे कपासी लागायेकी
• कुछ गांडुळ (गुन्ना) लगाबो को	• कुट साटाळ (गन्ना) लगाबो को

इन दोनों बोलियों में लडके–लडकी को 'मोंडा–मोंडी' तो 'पत्नी' को 'लुगाई' और 'भाई' को 'भई' कहते हैं। 'ब्याह' को 'बिया' या 'ब्या' कहते हैं। इस गांव के स्त्री–पुरुषों को हिंदी के सैकडों लोकगीत पठीत है। जैसे–पूंजाबाई, कौशल्याबाई, गुलाबसिंग, रंजनसिंग, दगडूसिंग, सरदारसिंग आदि को। नये पीढी के लडको को यह गीत पठीत नहीं है। अर्थात् पुराने पीढी के साथ इस लोक संस्कृति का धन चला जायेगा। इसका संकलन होना चाहिए। इस गांव की एक मुस्लिम औरत जो बकरियाँ ले खेत जा रही थी उसकी हिंदी परदेशी या धनगरी हिंदी से पूर्णतः भिन्न थी। उस शैली का उद्धरण निम्नांकित है–

''क्या करते
करते रोजाना
भरते पेट
करते खेती में''

वह आगे कहती है–

''अरे अल्ला
छोनों कुंवारे बच्चे हैं
बेटी है ना
शादी सरीके
बाप गुजर गया
चौथा महिना हुआ
काए की खेती
रोज मजुरी काम कर, पेट भरते
थोडा बहुत कमाता छोकरा
कोंबड्या संभालता
कोंबड्या को लगते पाच किलो दाने रोज के
करजा हुआ लोगों का
गरीब मामला।''

वैसे इस गांव की हिंदी भाषा और लोकगीत स्वतंत्र शोध का विषय है।

इसी तहेसिल में घोडगांव आता है। उस गांव में लोहार, वैष्णव, बैरागी, कायस्थ, हलवाई अपनी मातृभाषा हिंदी में ही वार्तालाप करते हैं। घोडेगांव के नजदीक गोलेगांव है, वहाँ मुस्लिम समाज के लोग हिंदी बोलते हैं पर उन पर मराठी का प्रभाव दिखाई देता है–

''मौसम ढगाल वातावरण का है
धूप में जाने का लाग नहीं

अच्छी चव भी नहीं लगती

ऐसी भानगड है।

तले हुए नहीं खाता

बोलने के लिए अवघड लगता

ऐसी भानगड है।''

इस गाँव में बहुवचन के लिए धूपा, बाता, नामा, घरा शब्दप्रयोग करते हैं। खुलताबाद की तुलना में पैठण तहेसिल के मुस्लिम समाज की हिंदी में मराठी के शब्द अधिक मिलते हैं–जैसे–

खुलताबाद	पैठण
• दरवाजा	• कडी कावड
• ताला	• कुलुप
• गाँव	• खेडे

केवल गोलेगांव में ही नहीं पूरे मराठवाडा में बहुवचन बनाते समय 'आ' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाया जाता है, जैसे– 'घरा'। फारसी में बहुवचन का प्रयोग करते समय 'आ' प्रत्यय लगाया जाता है। इसी प्रभाव से दक्खिनी हिंदी में बहुवचन बन जाता है। खुलताबाद में 'बच्चा' शब्द प्रयुक्त होता है तो पैठण में 'छोकरा'। एक ही जिले के दो तहसिलों की हिंदी में सहजता से अंतर ज्ञात होता है। अतः यह स्वतंत्र शोध का विषय है।

संदर्भ

1) काशीनाथ ढोकरट–मराठवाडा का हिंदी कलगी तुरा काव्य, पृ.354

2) बशीर नवाज–कवि औरंगाबाद (साक्षात्कार से)

3) अलीम सय्यद की माँ–जाफरावाडी (साक्षात्कार से)

4) इसूब बेग–गोलेगाव (साक्षात्कार से)